गुरु नानक – सबद ५१
आवहु भैणे गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ॥
रागु सिरिरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १७

आवहु भैणे गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ॥
मिलि कै करह कहाणीआ समथ कंत कीआह ॥
साचे साहिब सभि गुण अउगण सभि असाह ॥१॥
करता सभु को तेरै जोरि ॥
एकु सबदु बीचारीऐ जा तू ता किआ होरि ॥१॥ रहाउ ॥
जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणीं ॥
सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥
पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी ॥२॥
केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दाति ॥
केते तेरे जीअ जंत सिफति करहि दिनु राति ॥
केते तेरे रूप रंग केते जाति अजाति ॥३॥
सचु मिलै सचु ऊपजै सच महि साचि समाइ ॥
सुरति होवै पति ऊगवै गुरबचनी भउ खाइ ॥
नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाइ ॥४॥१०॥

सार: सार्थक संगति तभी फलती-फूलती है जब उसमें गहरी समझ, आपसी सम्मान और खुला संवाद हो। जिन लोगों ने इस गुण को विकसित कर लिया है वह संतोष और धैर्य जैसे गुणों को अपनाते हैं। उनके अनुभवों से सीखकर, हम मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं जो सबकी भलाई के लिए समर्पित होने के लिए प्रेरित करती है।आपसी विकास को बढ़ावा देकर, हम अपने जीवन और दूसरों के जीवन को समृद्ध बनाते हुए, सुखद और स्थायी संबंध बना सकते हैं।

आवहु भैणे गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ॥
सभी साथियों को इकट्ठा करो और एक दूसरे को गले लगाओ।

मिलि कै करह कहाणीआ सम्रथ कंत कीआह ॥

मिलकर एक साथ, उस सर्वव्यापी साथी के गुणों पर चिंतन करें।

साचे साहिब सभि गुण अउगण सभि असाह ॥१॥

सर्वव्यापी ऊर्जा का सच्चा मालिक सभी गुणों का प्रतीक है लेकिन हमारे द्वारा सर्वव्यापी एकता को न समझ पाना, हमारी कमी है। (१)

करता सभु को तेरै जोरि ॥

सभी कुछ सर्वशक्तिमान रचयिता की शक्ति में है।

एकु सबदु बीचारीऐ जा तू ता किआ होरि ॥१॥ रहाउ ॥

एकमात्र सत्य पर विचार करें, यदि सर्वव्यापी ऊर्जा हर जगह है तो इसके अलावा और क्या है? (१)(विराम)

जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणीं ॥

उन लोगों से पूछें जिन्होंने गुणी संगति पाई है और जानें कि उन्होंने यह महान बंधन कैसे बनाया?

सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥

सहज समझ, संतोष और मधुर संवाद के माध्यम से।

पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी ॥२॥

प्रिय साथी, यानी गुण तभी प्राप्त होते हैं जब हम ऐसे ज्ञानपूर्ण शब्दों को सुनते हैं जो हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। (२)

केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दाति ॥

प्रकृति में ऐसे विभिन्न रूप हैं जो समृद्ध संसाधन प्रदान करते हैं।

केते तेरे जीअ जंत सिफति करहि दिनु राति ॥
सर्वव्यापी ऊर्जा, विभिन्न जीवों के रूप में, दिन-रात सराहनीय गुणों को दर्शाती है।

केते तेरे रूप रंग केते जाति अजाति ॥३॥
सर्वव्यापी ऊर्जा विभिन्न रूपों, रंगों की सभी सामाजिक और आर्थिक उच्च और निम्न श्रेणियों में व्यक्त की जाती है। (३)

सचु मिलै सचु ऊपजै सच महि साचि समाइ ॥
सच्चे स्वयं से जुड़ने पर सत्य की उत्पत्ति होती है, व्यक्ति सच्चा बनकर सत्य के साथ एक हो जाता है।

सुरति होवै पति ऊगवै गुरबचनी भउ खाइ ॥
अपने आस-पास के प्रति सचेत होने से सार्वभौमिक सम्मान विकसित होता है। ज्ञान के शब्द अंधकार से जागरूकता की ओर हमारा मार्ग रौशन करते हैं और भय को दूर करते हैं।

नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाइ ॥४॥१०॥
नानक कहते हैं कि सच्चा सर्वव्यापी मालिक अपनी सृष्टि की रचना को अपने भीतर विलीन कर लेता है। (४)(१०)

तत्त्व: गुरु नानक आत्म-जागरूकता और संसार के प्रति जागरूकता के महत्व पर प्रकाश डालते हैं, जो सार्वभौमिक सम्मान को बढ़ावा देती है। जागरूकता हमारे अंतर्संबंधों को प्रकट करती है जिससे हम अपने सच्चे स्वयं से जुड़ पाते हैं और ईमानदारी को अपनाते हैं। यह जागरूकता सम्मान, करुणा और समझ को प्रोत्साहित करती है, हमें निस्स्वार्थता, समानता और प्रेम की ओर ले जाती है, अंततः लोगों और हमारे आस-पास के वातावरण को सद्भाव में जोड़ती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com